श्री णमोकार अष्टोत्तरशत् नामाक्षर पूजन

माण्डला

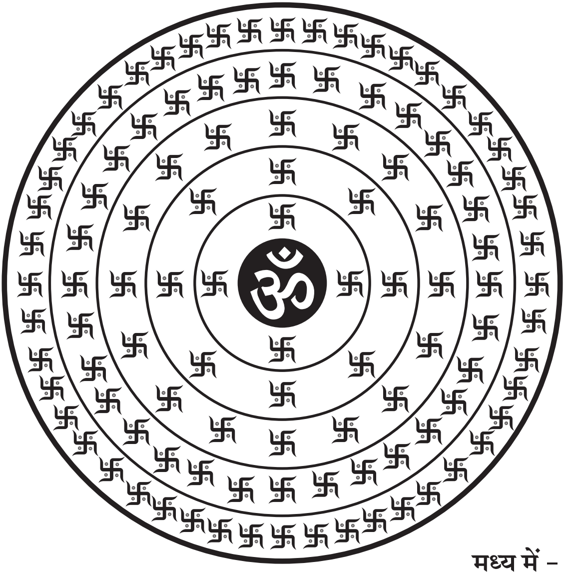

मध्य में – ॐ
4, 8, 16, 32, 48
कुल – 108 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति : श्री णमोकार अष्टोत्तरशत् नामाक्षर पूजन

कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम 2022, प्रतियाँ : 1000

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी – मो.: 9829076085
ब्र. आस्था दीदी – मो.: 9660996425
ब्र. सपना दीदी – मो.: 9829127533

संयोजन : ब्र. आरती दीदी – मो.: 8700876822

प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर–3 रोहिणी, दिल्ली
मो.: 9810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

पुण्यार्जक :

मुकेश – शिल्पी पंचोली, यश, साक्षी, पर्व

426, तिलक नगर, इन्दौर

णमोकार की महिमा

एकत्र पंच गुरु मंत्र पदाक्षराणि, विश्वत्रयं पुनरनन्त गुणं परत्र।
यो धारयेत्किल तुलानुगतं तथापि, वंदे महागुरुतरं परमेष्ठिमंत्रम्।।

उपरोक्त श्लोक के आधार पर आप जान सकते हैं कि महामंत्र णमोकार कितना महिमाशाली है जिसके अनेक पर्यायवाची नाम हैं जो सार्थक हैं। णमोकार मंत्र अपने आप में वह संजीवनी के समान है जो हर समस्याओं का समाधान हैं। देखा भी जाता है जब कोई समस्या में आता है तो णमोकार मंत्र का स्मरण करता है जैनत्व का आदि भी णमोकार है और अंत भी देखा जाता है। जब बालक बोलना प्रारम्भ करता है तो उसे णमोकार मंत्र बुलावाया जाता है और जीवन के प्रत्येक मोड़ पर णमोकार मंत्र का उपयोग करता है चाहे खाने के पूर्व हो या सोने के पूर्व हो या खाने के बाद हो या सोने के बाद पढ़ते लिखते किसी कार्य के पूर्व णमोकार का ही उच्चारण होता है और जीवन के अन्त में भी णमोकार से ही अन्त करते है णमोकार मंत्र वह मंत्र है जिसमें किसी भी आराध्य का नाम नहीं बल्कि पद का नमस्कार किया गया है। उस पद को प्राप्त प्रत्येक परमेष्ठी को नमस्कार है। वह पद भी अपने कर्त्तव्य में जो निष्ट हो उसी के लिए पूज्यता दी गई। यह मंत्र अनादि से चल रहा है अनन्त काल तक रहेगा। ऐसे महामंत्र को हम नमस्कार करते हैं और इसके पयार्यवाची मंत्रों के 108 विधान पूजन के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसके द्वारा भव्य जीव अपने जीवन में पुण्य का अर्जन करते हुए जीवन मंगलमय बनाएँगे।

इस विधान के कम्पोजिंग में संघस्थ आरती दीदी का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा, उनके लिए मेरा मंगलमय आशीर्वाद!

आचार्य विशद सागर जी

श्री णमोकार मंत्र स्तवन

लगाकर ध्यान तन मन से, करो जिनराज का दर्शन।
विशद दुख दूर होंगे सब, कटेंगे कर्म के बन्धन।। टेक।।
परम अरहंत हैं पावन, रहे जो लोक हितकारी।
हितैषी हैं जगत् जन के, कहे जो भव्य भयहारी।।
रमा शिवकंत के गाये, जगत् वन्दन हैं मनरंजन।
लगाकर ध्यान...।।1।।
निरंजन नित्य अविकारी, सिद्ध जिन सिद्ध पददायी।
कर्म अपने नशाते जो, आठ गुणधर बनें भाई।
अमर ज्ञायक स्वरूपी हैं, परम वन्दन हैं चितरंजन।
लगाकर ध्यान...।।2।।
पंच आचार के पालक, कहे आचार्य श्री ज्ञानी।
रहे सन्मार्ग के दाता, जगत् जन के हैं कल्याणी।।
मोक्ष के जो कहे राही, जगत् वन्दन है सुखकारण।
लगाकर ध्यान...।।3।।
कहे जो रत्नत्रयधारी, उपाध्याय ज्ञान के दाता।
ध्यान में जो निरत रहते, अंग पूरव के जो ज्ञाता।।
महत् महिमा के धारी हैं, चरण में हम करें वन्दन।
लगाकर ध्यान...।।4।।
विषय आशा के जो त्यागी, परिग्रह से रहित गाए।
रहे जिन धर्म आराधक, ध्यान में लीनता पाए।।
''विशद'' कीर्तन करो वन्दन, बने शिव सौख्य में कारण।
लगाकर ध्यान...।।5।।

श्री णमोकार अष्टोत्तरशत् नामाक्षर पूजन

स्थापना

महामंत्र अपराजित पावन, काल अनादी रहा महान।
पर्यायवाची रहे अनेकों, णमोकार के अनुपम नाम।।
महामंत्र का तीन योग से, भाव सहित जो करते जाप।
पूजा भक्ती आराधन से, कटते जन्म-जन्म के पाप।।

दोहा- णमोकार का मम हृदय, रहे हमेशा वास।
आह्वानन् करते यहाँ, पाने ज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टोत्तरशत् नामाक्षर युत णमोकार मंत्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

भरा ज्ञान संग्रह अन्तस में, राग से फिर भी जलते हैं।
कहकर पर को अपना जग में, स्वयं आपको छलते हैं।।
णमोकार के नाम अनेकों, अतिशय शांति प्रदायी हैं।
महामंत्र को ध्याने वाले, शिव पद के अनुयायी हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टोत्तरशत् नामाक्षर णमोकार मंत्रेभ्योः नमः जलं निर्व.स्वाहा।

चन्दन समशीतल स्वभाव मम, द्वेष अनल मे झुलस रहे।
महामंत्र को पाके प्राणी, पा लेते कुछ सूत्र नये।।

णमोकार के नाम अनेकों, अतिशय शांति प्रदायी हैं।
महामंत्र को ध्याने वाले, शिव पद के अनुयायी हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टोत्तरशत् नामाक्षर णमोकार मंत्रेभ्योः नमः चंदनं निर्व.स्वाहा।

वासी होके अक्षयपुर के, सक्षय जीवन पा रोवें।
काल अनादी मोहित होके, बीज कर्म के ही बोवें।।
णमोकार के नाम अनेकों, अतिशय शांति प्रदायी हैं।
महामंत्र को ध्याने वाले, शिव पद के अनुयायी हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टोत्तरशत् नामाक्षर णमोकार मंत्रेभ्योः नमः अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

कल्पतरु सम जीवन पाके, ज्ञान सुमन न खिले कभी।
काम रोग के कारण अपने, शील स्वभाव को तजें सभी।।
णमोकार के नाम अनेकों, अतिशय शांति प्रदायी हैं।
महामंत्र को ध्याने वाले, शिव पद के अनुयायी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टोत्तरशत् नामाक्षर णमोकार मंत्रेभ्योः नमः पुष्पं निर्व.स्वाहा।

समता सिन्धु से पूरित जीवन, फिर भी तृष्णा प्यासी है।
स्वयं नाथ होके इच्छा की, बनी आतमा दासी है।।
णमोकार के नाम अनेकों, अतिशय शांति प्रदायी हैं।
महामंत्र को ध्याने वाले, शिव पद के अनुयायी हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टोत्तरशत् नामाक्षर णमोकार मंत्रेभ्योः नमः नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

मोहमहातम ने रवि चेतन, काल अनादी घेरा है।
भ्रमण जीव करता है जग में, छाया घोर अंधेरा है।

णमोकार के नाम अनेकों, अतिशय शांति प्रदायी हैं।
महामंत्र को ध्याने वाले, शिव पद के अनुयायी हैं।।6।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टोत्तरशत् नामाक्षर णमोकार मंत्रेभ्यो: नम: दीपं निर्व.स्वाहा।
विशद चेतनागृह में चिन्मय, धूप निरन्तर जलती है।
भाव कर्म की शक्ती फिर भी, जग जीवों को छलती है।।
णमोकार के नाम अनेकों, अतिशय शांति प्रदायी हैं।
महामंत्र को ध्याने वाले, शिव पद के अनुयायी हैं।।7।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टोत्तरशत् नामाक्षर णमोकार मंत्रेभ्यो: नम: धूपं निर्व.स्वाहा।
सत्संयम के तरु में अनुपम, मुक्ती के फल फलते हैं।
मोक्ष महाफल पाते हैं जो, मुक्ती पथ पर चलते हैं।।
णमोकार के नाम अनेकों, अतिशय शांति प्रदायी हैं।
महामंत्र को ध्याने वाले, शिव पद के अनुयायी हैं।।8।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टोत्तरशत् नामाक्षर णमोकार मंत्रेभ्यो: नम: फलं निर्व.स्वाहा।
जल गंधदिक अष्ट द्रव्य का, पावन अर्घ्य बनाते हैं।
भक्ति भाव से अर्पित करके, पद अनर्घ्य भवि पाते हैं।।
णमोकार के नाम अनेकों, अतिशय शांति प्रदायी हैं।
महामंत्र को ध्याने वाले, शिव पद के अनुयायी हैं।।9।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टोत्तरशत् नामाक्षर णमोकार मंत्रेभ्यो: नम: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
सोरठा- महामंत्र णवकार, रहा विनायक लोक में।
वन्दन बारम्बार, करते शांतीधार दे।।
।। शान्तये शांतिधारा ।।

दोहा– पुष्पांजलि के साथ, पूज रहे णमकार हम।
जोड़ के दोनों हाथ, वन्दन करते भाव से।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

अर्घ्यावली

सोरठा– महामन्त्र णवकार, महिमामयी है जगत में।
वन्दन बारम्बार, करते हैं हम भाव से।।

(अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्)

अष्टोत्तर शत् नामाक्षर

(शम्भू छन्द)

'अपराजित' यह महामंत्र है, सारे जग में अपरम्पार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपराजित णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा 'अनादी निधन' मंत्र यह, परमेष्ठी वाचक णवकार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनादी निधन णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामंत्र' कहलाता है शुभ, तीन लोक में मंगलकार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामंत्र णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मृत्युंजय' यह मंत्र कहा है, ध्याते सुर नर मुनि अनगार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युंजय णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'सर्व सिद्ध' है मंत्र महामह, तीन जगत में अपरम्पार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्व सिद्ध णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'पंच नमस्कार' मंत्र कहा यह, अतिशयकारी मंगलकार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं पंच नमस्कार णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'तारण तरण' मंत्र है पावन, भव सिन्धू से करता पार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं तारण तरण णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'चित् चैतन्य' मंत्र कहलाए, आतम का है जिसमें सार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं चित् चैतन्य णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'मूलमंत्र' यह मूल धर्म का, ध्याते जिसको सब नर नार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलमंत्र णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भव तारक' शुभ मंत्र विशद यह, करने वाला भव से पार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।10।।

ॐ ह्रीं भव तारक णमोकार मंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंगलमय' यह मंत्र कहाए, जग जन का करता उपकार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलमय णमोकार मंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पंच परमेष्ठी' वाचक ध्याते, महामंत्र शुभ मंगलकार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंच परमेष्ठी णमोकार मंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'अमेय' कर्मारि विनाशक, मोक्ष मार्ग का शुभ आधार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमेय णमोकार मंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामंत्र यह रहा 'सनातन', ध्याते जिसको हो उद्धार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं सनातन णमोकार मंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिपति' महामंत्र मंगलमय, ध्यायें जिसको भली प्रकार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं अधिपति णमोकार मंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामन्त्र 'शाश्वत' कहलाए, शाश्वत पद दायक शुभकार।
परमेष्ठी पद को हम पाएँ, वन्दन करते बारम्बार।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्ध स्वरूप' मंत्र अविनाशी, करने वाला जग कल्याण।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध स्वरूप णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामन्त्र 'परमेष्ठी वाचक', पूज रहे हम महति महान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठी वाचक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्ममलों से विरहित पावन, 'अचल' कहाए मंत्र महान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचल णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मांजन से रहित करे जो, कहा 'निरंजन' महिमा वान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरंजन णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम 'क्षयंकर' महामंत्र का, ध्याते हैं हम महति महान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।21।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षयंकर णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विघ्न विनाशक' महामंत्र को, ध्याते हैं जग के विद्वान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं विघ्न विनाशक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पाप विनाशी' मंत्र कहाये, करते हैं हम जिसका ध्यान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं पाप विनाशी णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुख कारक' है मंत्र मनोहर, सर्व सुखों का है जो धाम।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुख कारक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धि मंत्र' यह रहा लोक में, ऋद्धि सिद्धि दायक गुणखान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धि मंत्र णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहा 'स्वयंभू' मंत्र महामह, स्वयं सुपद दायक निर्वाण।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभू णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ओंकार' यह मंत्र अनादी, दायक वीतराग विज्ञान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं ओंकार णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामंत्र यह रहा 'विनायक', प्रथम करें जिसका शुभ ध्यान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं विनायक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योग रूप' है महामंत्र शुभ, योगी करते जिसका ध्यान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं योग रूप णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामंत्र 'विज्ञान' विशद है, सुर-नर करते हैं गुणगान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं विज्ञान णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परम अहिंसामयी' मंत्र है, दायक है जीवों को त्राण।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं परम अहिंसामयी णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'सत्य स्वरूपी' महामंत्र है, परम सत्य का देता ज्ञान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्य स्वरूपी णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्म स्वरूप' मंत्र है पावन, होता जिससे निज का भान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्म स्वरूप णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रत्नाकर' है मंत्र महामय, अतिशय कर समृद्धी वान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नाकर णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'अजेय' महामंत्र लोक में, लाख चुरासी मंत्रोंवान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं अजेय णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'संकट मोचन' जग जीवों का, है शिवकारी पावन यान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं संकट मोचन णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अग्रिम' मंत्र है सबसे आगे, जिसकी रही निराली शान।
परमेष्ठी पद हम भी पाएँ, महामंत्र का करके ध्यान।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रिम णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

सब 'रोग निवारक' भाई, है महामंत्र सुखदायी।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं रोग निवारक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मंत्र 'मोक्ष' कहलाए, जो भव से मुक्ति दिलाए।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्ष प्रदायक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'मंत्र कुशल' मनहारी, इस जग में मंगलकारी।
हम महामंत्रा को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्र कुशल णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जिन' महामंत्र शिवदायी, जो अनुपम मुक्ति प्रदायी।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिन णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मंत्र 'त्रिलोक' कहाए, त्रय लोक में पूजा जाए।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिव मंत्र' है मंगलकारी, जग जीवों का सुखकारी।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं शिव मंत्र णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मंत्र 'सारतर' जानो, शांती का हेतू मानो।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं सारतर णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'आत्म विशुद्धी' कारी, महामंत्र जगत हितकारी।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्म विशुद्धी णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'केवल' यह मंत्र निराला, सब कल्मष हरने वाला।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवल णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वोदय' मंत्र को ध्यायें, सब कार्य सफल हो जाएँ।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वोदय णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह 'बीज मंत्र' मनहारी, भवि ध्यायें मंगलकारी।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं बीज मंत्र णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मंत्र 'अलौकिक' भाई, जीवों को मोक्ष प्रदायी।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं अलौकिक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पारलौकिक' मंत्र कहाए, शिवपुर में जो पहुँचाए।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारलौकिक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महागूढ़' मंत्र है भाई, जीवों को सिद्धि प्रदायी।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं महागूढ़ णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षय' यह मंत्र कहाए, अक्षय पद जो दिलवाए।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षय णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आराधक' मंत्र निराला, त्रयलोक में जो है आला।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं आराधक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'श्रमण मंत्र' अनगारी, ध्याते हैं ऋषि अविकारी।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रमण मंत्र णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सार्थक' है अघ विनिवारी, गाया इच्छित फलकारी।
हम महामंत्र को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं सार्थक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोतियादाम छन्द)

'धर्म' है महामंत्र शुभकार, दिलाए मोक्ष महल का द्वार।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्व दर्शी' है मंत्र महान, विश्व का होता जिससे ज्ञान।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्व दर्शन णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र 'शुभ' कहलाए मनहार, सभी ध्यातें जग के नर-नार।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभ णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहा 'उन्नायक' यह महामंत्र, सुखों का है जो पावन तंत्र।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं उन्नायक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहा 'वात्सल्य' मंत्र शुभकार, जगाए जग जीवों से प्यार।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं वात्सल्य णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र यह 'विश्व वंद्य' णमोकार, नमन हो मंत्र को बारम्बार।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्व वंद्य णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र 'प्रातः स्मरणीय' जान, सभी ध्याते जग के विद्वान।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रातः स्मरणीय णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र है दिव्य 'दिव्यता वान', दिव्य सुख करता विशद प्रदान।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यता वान णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सृष्टि' का ज्ञायक मंत्र विशेष, जगत के ध्याते जीव अशेष।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं सृष्टि णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'मंत्र राज' महामंत्र, शांतिप्रद है पावन जो यंत्र।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्र राज णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंत्र अद्भुत' यह रहा महान, कराए स्व-पर का जो ज्ञान।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्र अद्भुत णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र यह 'अनुपम' रहा प्रमाण, जगत जन को देता है त्राण।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनुपम णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चिदानंद' दायक मंत्र विशेष, सौख्य दायक है जो अवशेष।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिदानंद णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र है 'सर्व सिद्ध' शुभकार, करे जग जीवों का उद्धार।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व सिद्ध णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र का 'धर्म चक्र' है नाम, दिलाए जीवों को शिव धाम।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म चक्र णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र 'निर्मल' कहलाए श्रेष्ठ, सुफल दायक जो रहा यथेष्ठ।
करें हम महामंत्र का ध्यान, शीघ्र हो मेरा भी कल्याण।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मल णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धड़ि छन्द)

महामंत्र 'श्रेष्ठ आज्ञा' कहाय, जिसको ध्याके भवि मोक्ष पाय।
जो महामंत्र का करे ध्यान, वे पाएँ शीघ्र शिव सौख्यमान।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठ आज्ञा णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामंत्र नाम 'आनन्द' दाय, भवि जीव भाव से जिसे ध्याय।
जो महामंत्र का करें ध्यान, वे पाएँ शीघ्र शिव सौख्यमान।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं आनन्द णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाय 'त्रिलोक' यह मंत्रराज, हम भाव सहित जो ध्याएँ आज।
जो महामंत्र का करें ध्यान, वे पाएँ शीघ्र शिव सौख्यमान।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह महामंत्र 'प्रज्ञा' कहाय, ज्ञानी होवे जो मंत्र ध्याय।
जो महामंत्र का करें ध्यान, वे पाएँ शीघ्र शिव सौख्यमान।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञा णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है महामंत्र 'अद्वितिय' महान, भवि जीव करें जिसका सुध्यान।
जो महामंत्र का करे ध्यान, वे पाएँ शीघ्र शिव सौख्यमान।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं अद्वितिय णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मंत्र 'अभीष्ट' आनन्दकार, हम ध्याएँ मंत्र को बार-बार।
जो महामंत्र का करें ध्यान, वे पाएँ शीघ्र शिव सौख्यमान।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभीष्ट णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मंत्र 'परम साधन' स्वरूप, ध्याके हो प्राणी ज्ञान रूप।
जो महामंत्र का करें ध्यान, वे पाएँ शीघ्र शिव सौख्यमान।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं परम साधन णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गणधर' कहलाए मंत्रराज, जिन चरण झुकाएँ शीश आज।
जो महामंत्र का करें ध्यान, वे पाएँ शीघ्र शिव सौख्यमान।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणधर णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है महामंत्र शुभ 'विमलरूप', जिसको ध्या पाएँ निज स्वरूप।
जो महामंत्र का करें ध्यान, वे पाएँ शीघ्र शिव सौख्यमान।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं विमलरूप णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञान वर्धक' है ये मंत्रराज, हम जिसको ध्याते स्वयं आज।
जो महामंत्र का करें ध्यान, वे पाएँ शीघ्र शिव सौख्यमान।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान वर्धक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ महामंत्र 'निश्चल' कहाय, स्थिरता उर में जो जगाय।
जो महामंत्र का करे ध्यान, वे पाएँ शीघ्र शिव सौख्यमान।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं निश्चल णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है महामंत्र 'श्रीमत' महान, श्रीदायक है जग में प्रधान।
जो महामंत्र का करें ध्यान, वे पाएँ शीघ्र शिव सौख्यमान।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमत णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

'अग्नि स्तंभक मंत्र' निराला, अष्ट कर्म का है नाशी।
चित् चैतन्य स्वरूप जीव का, पाएँ हम जो अविनाशी।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्नि स्तंभक मंत्र णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'जल स्तंभक' मंत्र मनोहर, चेतन का कल्मष धोए।
राग द्वेष आदि विकार जो, लगे अनादी के खोए।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं जल स्तंभक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्म विनाशक' महामंत्र है, महामंत्र सम कोई नहीं।
तीन लोक में सौख्य प्रदायक, हमने पाया नहीं कहीं।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्म विनाशक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आतम सूचक' महामंत्र है, जग के प्राणी ध्याते हैं।
ऋषि मुनि गणधर आदिक जग में, महिमा जिसकी गाते हैं।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं आतम सूचक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'अचिन्त्य' यह मंत्र महामह, अपने हृदय सजाते हैं।
तीन योग से महामंत्र को, सादर शीश झुकाते हैं।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्य णमोकार मंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आस्था' मंत्र रहा यह पावन, श्रद्धा जिससे होय प्रखर।
सुर नर किन्नर जिसको ध्याते, ध्याते गणधर मुनी प्रवर।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं आस्था णमोकार मंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'कल्याण' नाम जिसका शुभ, महामंत्र वह रहा महान।
करता है कल्याण जगत का, तीन लोक में मंत्र प्रधान।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण णमोकार मंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेद' नाम से जाना जाए, णमोकार शुभ मंत्र महान।
स्वपर भेद विज्ञान जगाए, अतः यहाँ करते गुणगान।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेद णमोकार मंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमोकार को 'संयम' कहते, संयम का है जिसमें वास।
संयम के धारी करते हैं, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाश।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं संयम णमोकार मंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध मंत्र का 'सौरभ' सारे, जग में गूँजे महति महान।
सिद्ध प्रमुख हैं महामंत्र में, जिनका जग करता गुणगान।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौरभ णमोकार मंत्रेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बोधि' मंत्र को कहते ज्ञानी, करने वाला बोधि प्रदान।
अनुक्रम से पाते हैं प्राणी, मंत्र ध्यान कर शिव सोपान।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं बोधि णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र 'प्रदीप' पावन कहलाए, सौरभ बिखरे चारों ओर।
भव्य जीव जिसको ध्याते हैं, मन को करता भाव विभोर।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रदीप णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रेखता छन्द)

'स्वस्ति' महामंत्र कहाए भ्रात, होय जिससे कर्मों का अंत।
ध्याएँ जीवन में सब ही लोग, परम पावन है णमोकार मंत्र।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्ति मंत्र णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'परम' है महामंत्र णमोकार, करे जो जीवों का कल्याण।
ध्याएँ जो जग के सारे जीव, पाएँ वे पावन पद निर्वाण।।97।।

ॐ ह्रीं अर्हं परम णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र का 'व्यापक' जानो नाम, लोक में व्यापक है मनहार।
हृदय में जागे मेरा ज्ञान, रहा जो अनुपम अतिशयकार।।98।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यापक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र है 'क्षायक' अतिशयकार, करे जो जग जन का कल्याण।
श्रेणि क्षायक चढ़कर के जीव, प्राप्त करते हैं पद निर्वाण।।99।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षायक णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र 'रत्नत्रय' रहा महान, धारकर संयम अतिशयकार।
प्राप्त करते हैं शिव सोपान, बनें वे प्राणी शुभ अनगार।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रय णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र शुभ कहलाए 'परमार्थ', होय शुभ जीवों का उपकार।
प्राप्त कर मुक्ती का सोपान, भक्ति करते हैं बारम्बार।। 101।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमार्थ णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र है 'इन्द्रिय दमन' विशेष, करें इस जग के जो भी जीव।
मोक्ष मारग करके संप्राप्त, पुण्य वे पावें श्रेष्ठ अतीव।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्रिय दमन णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए 'कषाय शमन' शुभकार, मंत्र यह मंगलमयी महान।
भाव से ध्याते हैं जो जीव, शीघ्र हो उन सब का कल्याण।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं कषाय शमन णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समाधी' कहलाए शुभ मंत्र, समाधी पाएँ जीव विशेष।
मोक्ष वे पाएँ जीव महान, नाशकर अपने कर्म अशेष।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं समाधी णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सहृदय' कहलाए पावन मंत्र, हृदय से धारें जग के जीव।
होय उन जीवों का कल्याण, धारते मुक्ती पथ वे जीव।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहृदय णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए मंत्र विशद 'ध्रुव धाम', ध्यान कर होवें शुभ परिणाम।
शांति का है शुभ जो सोपान, प्राप्त हो जिससे पद निर्वाण।।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं ध्रुव धाम णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र शुभ कहलाए 'स्वाधीन', पढ़े जो हो स्वाधीन महान।
होय जग जीवों का उद्धार, करे जो श्री जिन का यशगान।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वाधीन णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए अनुपम मंत्र 'पियूष', प्राप्त हो जिससे अक्षय धाम।
कर्म का करके पूर्ण विनाश, मंत्र को मेरा विशद प्रणाम।।108।।

ॐ ह्रीं अर्हं पियूष णमोकार मंत्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

'मंत्र अपराजित' आदिक नाम, एक सौ आठ कहे शुभकार।
विशद भावों से करें प्रणाम, मंत्र णमोकार को बारम्बार।।109।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्र अपराजित णमोकार मंत्रेभ्यो: पूर्णार्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य :

1. ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधूभ्यो नमः।

2. ॐ ह्रीं अनादिनिधन नमोकार मंत्राय नमः।

जयमाला

दोहा– तीन लोक में पूज्य है, मंत्र अनादि त्रिकाल।
णमोकार महामंत्र की, गाते हम जयमाल।।

(तामरस–छन्द)

जय जय जय महामंत्र नमस्ते, जय जय श्री अरहंत नमस्ते।
जय जय पावन तंत्र नमस्ते, जय जय सिद्ध अनन्त नमस्ते।।1।।
अतिशयकारी यंत्र नमस्ते, आचार्योपाध्याय संत नमस्ते।
अपराजित शुभ मंत्र नमस्ते, मृत्युंजयी महामंत्र नमस्ते।।2।।
सर्व सिद्धि प्रद मंत्र नमस्ते, मंत्रराज धीमंत नमस्ते।
मुक्ति प्रिया का कंत नमस्ते, अष्टोत्तर गुणवंत नमस्ते।।3।।
श्रेष्ठ सनातन रत्न नमस्ते, ज्ञानी करके यत्न नमस्ते।
ध्याते आठों याम नमस्ते, करते सतत प्रणाम नमस्ते।।4।।
अष्ठोत्तर शत नाम नमस्ते, पावन जो शिवधाम नमस्ते।
पददायक निष्काम नमस्ते, पावें जो निर्दाम नमस्ते।।5।।
मंत्रराज ॐकार नमस्ते, करता जग उद्धार नमस्ते।
अतिशय कर सुखकार नमस्ते, पावन विस्मय कार नमस्ते।।6।।
परम अहिंसाकार नमस्ते, करे विशद अविकार नमस्ते।
सर्वोदय शुभकार नमस्ते, पारलौकिक मनहार नमस्ते।।7।।

विश्व वन्दनीय जाप नमस्ते, नाशक सारे पाप नमस्ते।
हरे सर्व संताप नमस्ते, रहे कोई न ताप नमस्ते।।8।।
सर्व सिद्धि दातार नमस्ते, करता जग उपकार नमस्ते।
भव से करता पार नमस्ते, करता जग उपकार नमस्ते।।9।।

सोरठा- महिमामयी महान, णमोकार के नाम शुभ।
करते हम गुणगान, पाने को शिवपद 'विशद'।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टोत्तर नामाक्षर युत णमोकार मंत्रेभ्यो: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- महिमा का ना पार, महामंत्र का लोक में।
वन्दन बारम्बार, करते हम णमोकार को।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

श्री णमोकार मंत्र चालीसा

महामंत्र – णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उव्वज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

दोहा – तीन लोक से पूज्य हैं, अर्हतादि नव देव।
मन वच तन से पूजते, उनको विनत सदैव।।
णमोकार महामंत्र है, काल अनादि अनन्त।
श्रद्धा भक्ती जाप से, बनें जीव अर्हन्त।।

चौपाई

णमोकार शुभ मंत्र कहाया, काल अनादि अनन्त बताया।।1।।
मंत्रराज जानो शुभकारी, अपराजित अनुपम मनहारी।।2।।
परमेष्ठी वाचक यह जानो, महिमाशाली जो पहिचानो।।3।।
जिनने कर्म घातिया नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे।।4।।
छियालिस मूलगुणों के धारी, मंगलमय पावन अविकारी।।5।।
सर्व चराचर के हैं ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।।6।।
दोष अठारह रहित बताए, चौंतिस अतिशय जो प्रगटाए।।7।।
अनन्त चतुष्टय जिनने पाए, प्रातिहार्य आ देव रचाए।।8।।
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।9।।
समवशरण आ देव बनाते, शत् इन्द्रों से पूजे जाते।।10।।
कल्याणक शुभ पाने वाले, सारे जग में रहे निराले।।11।।

अष्ट कर्म जिनके नश जाते, जीव सिद्धपद अनुपम पाते।।12।।
जो शरीर से रहित बताए, सुख अनन्त के भोगी गाए।।13।।
फैली है जग में प्रभुताई, अनुपम सिद्धों की प्रभु भाई।।14।।
आठ मूलगुण जिनके गाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।।15।।
सिद्ध सुपद हम पाने आए, अतः सिद्ध गुण हमने गाए।।16।।
आचार्यों के हम गुण गाते, पद में नत हो शीश झुकाते।।17।।
पंचाचार के धारी गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।।18।।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जिन शासन के हैं रखवाले।।19।।
आवश्यक पालन करवाते, प्रायश्चित दे दोष नशाते।।20।।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अविकारी।।21।।
द्रव्य भाव श्रुत के जो ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।।22।।
ज्ञानाभ्यास करें जो भाई, संतों को शिक्षा दें भाई।।23।।
द्वादशांग के ज्ञाता जानो, पच्चिस गुणधारी पहिचानो।।24।।
रत्नत्रयधारी कहलाए, मुक्ति पथ के नेता गाए।।25।।
दर्श-ज्ञान-चारित के धारी, साधू होते हैं अनगारी।।26।।
विषयाशा के त्यागी जानो, संगारम्भ रहित पहिचानो।।27।।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जो उपसर्ग परीषह सहते।।28।।
हैं अट्ठाईस मूलगुणधारी, करें साधना मंगलकारी।।29।।
पंचमहाव्रत धारी जानों, पंचसमितियाँ पालें मानों।।30।।
पंचेन्द्रिय जय करने वाले, आवश्यक के हैं रखवाले।।31।।
णमोकार में इनकी भाई, अतिशयकारी महिमा गाई।।32।।

महामंत्र को जिसने ध्याया, उसने ही अनुपम फल पाया।।33।।
अंजन बना निरंजन भाई, नाग युगल सुर पदवी पाई।।34।।
सेठ सुदर्शन ने भी ध्याया, सूली का सिंहासन पाया।।35।।
सीता सती अंजना नारी, ने पाया इच्छित फल भारी।।36।।
श्वानादिक पशु स्वर्ग सिधाए, णमोकार को मन से ध्याए।।37।।
महिमा इसकी को कह पाए, लाख चौरासी मंत्र समाए।।38।।
भाव सहित इसको जो ध्याए, इस भव के सारे सुख पाए।।39।।
अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए।।40।।

दोहा – चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
विशद गुणों को प्राप्त कर, बने श्री का नाथ।।
धूप अग्नि में खेयकर, करें मंत्र का जाप।
अन्त समय में जीव के, कटते सारे पाप।।

जाप – ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

श्री णमोकार मंत्र आरती

(तर्ज : आज मंगलवार है...)

महामंत्र नवकार है, मुक्ती का यह द्वार है।
ध्यान जाप आरति कर प्राणी, होता भव से पार है।।
होता भव से पार है।। टेक।।

महामंत्र के पंच पदों में, परमेष्ठी को ध्याया है।
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु गुण गाया है।।
महामंत्र नवकार..... ।। 1 ।।
मूलमंत्र अपराजित आदिक, मंत्रराज कई नाम रहे।
श्रेष्ठ अनादिऽनिधन मंत्र के, और अनेकों नाम कहे।।
महामंत्र नवकार..... ।। 2 ।।
महामंत्र को जपने वाले, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
सुख शांती आनन्द प्राप्त कर, निज सौभाग्य जगाते हैं।।
महामंत्र नवकार..... ।। 3 ।।
काल अनादी से जीवों ने, सत् श्रद्धान जगाया है।
महामंत्र का ध्यान जापकर, स्वर्ग मोक्ष पद पाया है।।
महामंत्र नवकार..... ।। 4 ।।
सुनकर नाग नागिनी जिसको, पद्मावति धरणेन्द्र भये।
अंजन हुए निरंजन पढ़कर, अन्त समय में मोक्ष गये।।
महामंत्र नवकार..... ।। 5 ।।
प्रबल पुण्य के उदय से हमने, महामंत्र को पाया है।
अतिशय पुण्य कमाने का शुभ, हमने भाग्य जगाया है।।
महामंत्र नवकार..... ।। 6 ।।
महामंत्र का ध्यान जाप कर, आरति करने आए हैं।
'विशद' भाव का दीप जलाकर, आज यहाँ पर लाए हैं।।
महामंत्र नवकार..... ।। 7 ।।